बन्ध्या-गर्भिणी

Onkar Press, Allahabad.

संग्रह-कर्ता—ठाकुर प्रसाद चतुर्वेदी

प्रकाशक—चतुर्वेदी एण्ड को०
मुट्ठीगंज, इलाहाबाद सिटी

००० प्रतियां] [मूल्य ≈)॥

निवेदन

ज़च्चा और बच्चा नामक छोटी सी पुस्तक का संग्रह जिस समय मैंने किया था उसी समय मेरे मन में यह बात आयी थी कि जच्चा और बच्चा संबन्धी आवश्यक बातों और तत्सम्बन्धी औषधियों के उल्लेख के साथ ही साथ गर्भ सम्बन्धी आवश्यक बातों और औषधियों का भी उल्लेख कर दिया जाता तो कहीं अच्छा होता । परन्तु वह पुस्तक प्रकाशित हो चुकी थी अतएव पुस्तक में ये आवश्यक बातें न जोड़ी जा सकीं । इसीलिये गर्भिणी और बन्ध्या नामक इस दूसरी पुस्तक का संग्रह किया गया है । इसमें गर्भ सम्बन्धी आवश्यक बातों के साथ २ बन्ध्याओं के लक्षण और उनकी औषधियों का भी उल्लेख किया गया है । पुस्तक कैसी हुई है यह बताना मेरा काम नहीं है । यह काम पाठकों का है । हां यह मैं अवश्य जानता हूँ कि मेरे अल्प ज्ञान के कारण इसमें भाषा संबन्धी त्रुटियां अवश्य रह गई होंगी, इस सम्बन्धी की बड़ी २ पुस्तकें अधिक मूल्य पर सर्व साधारण को सुलभ नहीं है यह देख कर ही मैंने इस संग्रह को प्रकाशित किया है । इसमें आवश्यक बातों का उल्लेख भी है और साथ ही साथ मूल्य भी इतना कम है कि सर्व साधारण इससे लाभ उठा सकें । इससे यदि कुछ भी लाभ पहुँचा तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा । यदि कोई सज्जन इसके संबन्ध की आवश्यक सूचना मुझे देना चाहें अथवा कोई ऐसी बात बताना चाहें जिसका उल्लेख इस पुस्तक में आवश्यक है मैं अगले संस्करण में उसको कृतज्ञता पूर्वक अवश्य प्रकाशित करूँगा ।

-संग्रह कर्त्ता

बन्ध्या और गर्भिणी

ब्रह्मचर्य

चतुर्थ मायुषो भागं मुषित्वाद्यं गुर्पोद्विजः।
द्वितीय मायुषो भागं कृत दारो ग्रहे बसेत ॥
(महर्षि मनु)

अर्थात्

पुरुष को २५ वर्ष की अवस्था के प्रथम गृहस्थी नहीं करनी चाहिए। २५ वर्ष तक पुरुष पूर्ण ब्रह्मचारी रहे।

मरणं विन्दु पातेन जीवनं विन्दु धारणात्।
(योगिराज शिव)

इससे तात्पर्य्य यह है कि वीर्य पात ही मृत्यु, और वीर्य रक्षा ही जीवन है। अतएव स्त्रियां यदि वे चाहती हैं कि उन का सुहाग बहुत दिनों तक रहे व वे स्वयं व अपने पति को स्वस्थ देखना चाहती हैं तो वे कुसमय मैथुन से बचें—और बचावें।

बाल १५ वा १६ वर्ष में और कन्या ११ वा १२ वर्ष में यौवन अवस्था में प्रवेश करने लगते हैं। और इसी अवस्था दोनों के अङ्गों में पुष्टता और शरीर में स्फूर्ति आने लगती है। मन में भी इसी समय गुदगुदी होने लगती है।

इसी समय में सन्तानोत्पादक इन्द्रिय पुष्ट होने लगती है और वीर्य कोष में वीर्य पैदा होने लगता है और ऐसे ही

स्त्रियों की भी छाती पुष्ट होने लगती है और नितम्ब भारी होने लगते हैं और गर्भाशय के भीतर रक्त का संचार होता है जिससे रजो दर्शन हो जाता है।

पर यह समय वीर्य पतन का नहीं है। जो इसी समय वीर्य पतन करता है वह जन्म भर रोगी वा अस्वस्थ वा कमज़ोर रहता है। और जो कम से कम ४ वर्ष और ब्रह्मचर्य का पालन कर लेता है यानी स्त्री कन्या १५ वा १६ वर्ष व बालक २० वर्ष तक ब्रह्मचर्य रहता है वे पुष्ट, पुरुषार्थी और अधिक दिनों तक जीने वाले होते हैं और उनकी सन्तान भी निरोग उत्पन्न होती है। इससे कम अवस्था में सन्तान पैदा करने से पुरुष वा स्त्री शीघ्र बुढ़ापे को प्राप्त हो जाते हैं।

स्थान २ के जल वायु के अनुसार तो मासिक धर्म जल्दी वा देर से तो होता ही है पर शिक्षा प्रणाली, घर वा समाज के रहन सहन के ढङ्ग, सभ्यता और ९ बातों के कारण भी रजोदर्शन देर व जल्दी होता है। बालक व कन्याओं दोनों की बुरी सङ्गत से भी इस पर असर पड़ता ही है।

चञ्चल स्वभाव की कन्यायों को तथा पौष्टिक और उत्तेजक भोजन से, शारीरिक परिश्रम न करने से यानी अमीरों की कन्याओं को भी रजो दर्शन शीघ्र होता है। अतएव जहां तक हो सके बालक और बालिकाओं को ऊपर लिखी बातों से वञ्चित रक्खे।

यदि स्त्री समय के पहिले ऋतुमती हो जाय तो उसको पुरुष समागम बहुत देर से करना चाहिए। ३६ वार ऋतु होने के बाद पुरुष का सहवास उचित है—वरनः वे बहुत शक्तिहीन, और जवानी में ही बुड्ढी हो जायंगी।

मासिक धर्म होने के दो चार दिन पहिले से शरीर में कुछ फेरफार होने लगता है। मसलन आलस्य और अरुचि तो साधारण बात है, कमर, नितम्ब और पेड़ू भारी हो जाते हैं। और बाज़ स्त्रियां इस समय में चिड़चिड़े स्वभाव की हो जाती हैं। जो स्त्रियां चञ्चल स्वभाव की होती है उन्हें इन दिनों में अजीर्ण और कब्ज़ हो जाता है। अर्थात घर की स्त्रियां जो शारीरिक परिश्रम नहीं करती, तथा जो मोटी होती हैं और विषय वासना की चर्चा करती रहती हैं यानी बुरे उपन्यास इत्यादि पढ़ती रहती हैं उनके इन दिनों में पेड़, नितम्ब और कमर में बहुत पीड़ा होती है और हाथ पैर टूटते हैं।

अतएव परिश्रम हर स्त्री को सदा करते रहना चाहिए।

वर और कन्या का चुनाव

वर और कन्या की अवस्था के बारे में पहिले ही लिखा जा चुका है कि जब वर और कन्या पूर्ण रूप से पुष्ट हो जाय तब विवाह करें। अब वर-कन्या के चुनाव के बारे में प्राचीन ऋषियों ने लिखा है—

नोद्वहेत्कपिलां कन्यां नाधिकाङ्गी न रोगिणीम्।
नालोमिकां नातिलोमां न वाचारां न पिङ्गलाम्॥
नर्क्ष वृक्ष नदी नाम्नीतान्त्य पर्वत नामिकाम्।
नपक्ष्यहि प्रेष्यनाम्नीं न च भीषण नामिकाम्॥
अव्यङ्गाङ्गी सौम्यनाम्नीं हंसवारण गामिनीम्।
तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गी मुद्वहेत् स्त्रियम्।

अर्थात्:—सरके पीले बाल वाली, अधिक अंग वाली, रोगिणी, जिसके शरीर में अधिक बाल हों वा बिल-

कुल न हों, बहुत बक बक करने वाली, पीले नेत्र वाली नक्षत्र, वृक्ष नदी, म्लेच्छ, पर्वत, पक्षी, सर्प और ऐसे नाम वाली जिससे दासता का भाव प्रगट हो वा भयङ्कर नाम हो, ऐसी कन्या से कदापि विवाह न करे। जो अङ्ग हीन न हो, जिसका नाम सुनने में अच्छा मालुम हो, चाल जिसकी हंस और हाथी की तरह हो, जिसके रोम और दांत छोटे हों ऐसी कोमलाङ्गी कन्या से विवाह करना चाहिए।

और इसी तरह से किस पुरुष के साथ विवाह न करे लिखते हैं—

हीन क्रियं निष्पुरुषं निश्छन्दो रोम शार्शसम्।
क्षय्या मयाग्यपस्मारि श्वित्रि कुष्ठि कुलानि च॥

अर्थात्:—जो पुरुष नामर्द हो, जिसके कुल में पुत्र न उत्पन्न हुआ हो, विद्याहीन तथा कला हीन हो, जिसके शरीर पर रोम हों, जिसके कुल में बवासीर, क्षयी, मन्दाग्नि, मृगी, श्वेत कुष्ट और दूसरे प्रकार के कुष्ट हों, ऐसे पुरुष के साथ कदापि विवाह न करे।

इसके अतिरिक्त वंश परम्परा की बातों पर ध्यान देना चाहिए। मसलन विलासिता, वर्ण, शारीरिक दोष, रोग, गर्मी, उन्मादता, बधिरता, प्रमेह, मृगी, मानसिक निर्बलता पागलपन इत्यादि २ यह बातें ऐसी होती हैं कि वंश परम्परा से बराबर चली ही जाती हैं जो सन्तान में भी आ जाती हैं। लम्बाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। लम्बा पुरुष व छोटे क़द की स्त्री न होना चाहिए और न लम्बी स्त्री को छोटे क़द का पुरुष हो। लम्बी क़द की स्त्री व चाहे जैसा पुरुष हो।

गर्भ प्रकरण

आर्तवस्राव (रजस्वला माहवारी) के प्रथम दिन से १६ रात्रि तक स्त्री ऋतुमती कहलाती है—इसमें से ३ दिन रजस्वला के निकाल देने से बाकी १३ दिन गर्भ ग्रहण के योग्य है।

रजस्वला के दिनों के नियम

जिस दिन से स्त्री रजस्वला हो उस दिन से जीव हिंसा न करे, ब्रह्मचर्य से रहे, कुशा की शैया, वा तख्त वा चटाई पर सोवे, (चारपाई वा मुलायम बिस्तर पर न सोवे) (इन तीन दिनों में एकान्त बास करे) पति का भी मुंह न देखे किसी धातु के बर्तन में (कांसा, पीतल आदि) में न खावे, मिट्टी के बर्तन वा पत्तल दोना में मूंग भात (यानी बहुत हलका भोजन) खावे, आंसू न बहावे, (यानी रोवे नहीं) नाखून न काटे, तैल आदि न लगावे, स्नान न करे (कारण यह है कि रजस्वला अवस्था में खून में गर्मी होती है और स्नान से ठन्ढक आती है तो गर्मी और सर्दी का मेल हानिकारक होता है दूसरी हानि यह होती है कि रजस्वला अवस्था में जो बुरा खून निकलता है सर्दी पहुँचने के कारण पूरी तरह से नहीं जारी होता और उस खून के रह जाने से बड़ी २ हानियां होती हैं अतएव स्नान न करे। आज कल बहुधा हर जाति में यहां (भारतवर्ष में) रजस्वला स्त्रियां स्नान करती ही हैं—मैंने वैद्यक के दस ग्रन्थ देखे सब आचार्यों का यही मत है कि रजस्वला के समय में यानी तीन दिन स्नान नहीं करे। स्त्रियों को इस बात पर अवश्य ध्यान देना चाहिये। दिन में न सोवे, न कहीं आवे जावे,

बहुत ऊँचे शब्द वा कठोर शब्द न कहे न सुने, हंसी ठिठोरी न करै, बहुत बोले यानी बकवाद न करे, परिश्रम न करे, पृथ्वी को नाखून से वा किसी लकड़ी आदि से न खोदे, तेज हवा में न बैठे, बोझा न उठावे बारबार सीढ़ी न चढ़े उतरे यह सब नियम रजस्वला स्त्री को पालने चाहिए।

नियम के न पालने के दोष

जो रजस्वला स्त्री किसी भी कारण से ऊपर लिखे नियम न पाले तो उसके दोष नीचे लिखे अनुसार गर्भ के बालक में आ जाते हैं :—रजस्वला स्त्री के रोने से बालक बुरे नेत्र का होता है, नाखून काटने से कुनखी, तेल आदि की मालिश से कुष्टी, चन्दन आदि लगाने से और स्नान करने से दुखिया, काजल सुरमा लगाने से अंधा, दिन में सोने से बालक अत्यन्त निद्रालु डोलने, फिरने से चञ्चल, उच्चस्वर के सुनने से वा कहने से बहरा, हंसने से बालक के दांत, तालु, होठ व जीभ, काले हो जाते हैं, बहुत बकवाद करने से बकवादी, परिश्रम करने से बावला, पृथ्वी खोदने से बालक देर से चलने वाला हो वा कम चले यानी पैरों से कमजोर होवे, रोज वायु सेवन से बालक उन्मत्त (बाल रोग से पीड़ित हो) होता है।

रजस्वला के कृत्य

गर्भ

रजस्वला स्त्री चौथे दिन जब स्नान करके शुद्ध हो तब साफ़ कपड़े पहिन शृंगार करे—पति का दर्शन करे अथवा अपना ही मुख आरसी में देखे वा किसी गुरुजन वा श्रेष्ठ विद्वान तेजस्वी प्रतापी वा जैसा पुत्र वा पुत्री चाहे वैसे

पुरुष का दर्शन कर उसका ध्यान रक्खे तो वैसा ही पुत्र उत्पन्न होता है।

पुरुष के कृत्य

जो स्त्री रजस्वला की अवस्था में पुरुष रमन करे तो बड़ी हानि है यानी प्रथम दिन के रमन करने से पुरुष की आयु क्षीण होती है दूसरे दिन में रमन करने से बालक जीता नहीं और तीसरे दिन के रमन करने से जो बालक होता वह अल्प आयु और विकलांग होता है। रजो दर्शन से चौथे, छठवें, आठवें दसवें, बारहवें और चौदहवें दिन के गर्भ से पुत्र व अन्य दिनों में पुत्री उत्पन्न होती है।

नोट (१)—ग्यारहवां, तेरहवां व पन्द्रहवां दिन का भी निषेध है।

(२)—यदि चौथे दिन भी स्त्री के रजोदर्शन होता हो तो उस दिन भी सेवन न करे।

शुद्ध आर्त्तव की पहिचान

जिस स्त्री की योनि से लाख के रङ्ग के समान, व खरगोश के रक्त के समान रक्त निकले। मासिक रक्त में भीगा हुआ कपड़ा सुखाने पर धोने से साफ हो जाय वा कुछ पिलाहट सी लिए हुए हो, रक्त का भीगा हुआ कपड़ा रङ्गत बदले लेकिन लाल ही रहे, दाह न हो, ५ रात्रि तक स्राव हो, ज्यादा वा कम न निकले यह शुद्ध आर्त्तव के लक्षण है तात्पर्य यह है कि यदि मासिक धर्म ऊपर लिखे अनुसार न हो स्त्री को जान लेना चाहिये कि उसके शरीर में कुछ व्याधि है अतएव उसे किसी योग्य वैद्य वा डाक्टर से उपचार कराना चाहिए।

आर्त्तव के जांचने की आवश्यकता यह है कि इस मास में गर्भ रहेगा वा नहीं। यदि आर्त्तव शुद्ध है तब स्त्री गमन करे वरनः न करे। कारण कि अशुद्ध आर्त्तव से गर्भ यदि किसी कारण से रह गया तो सन्तान रोगी उत्पन्न होगी वा गर्भ रहेगा ही नहीं। इन दोनों अवस्था में (यानी अयोग्य सन्तान होने से भी) वीर्य का व्यर्थ पात करना बुरा है और जो पुरुष व्यसन के लिहाज से मैथुन करते हैं उन्हें ऋषि असुरों की संख्या में गणना करते हैं।

स्त्री के, दूषित आर्त्तव व अन्य बीमारियां होने के कारण

नशीली चीज़ों के व्यवहार करने से, अप्राकृतिक भोजन से, अधिक भोजन करने से, गर्भ स्राव व गर्भ पात से, अति मैथुन से, चिन्ता से, दिन में सोने से, व्यायाम न करने से, प्रदर रोग हो जाते हैं।

गर्भाधान न होने के कारण व लक्षण

जो स्त्री ऋतुमती हो पर गर्भ नहीं रहे उसका आर्त्तव दूषित समझना चाहिये।

पित्त दूषित आर्त्तव

लक्षण :—जिस स्त्री का आर्त्तव वा रुधिर (मासिक धर्म) का रङ्ग पकी जामुन का फल यानी काला निकले, कटि (कमर) में दर्द हो, पेट में जलन हो, हाथ पैर गरम रहे, रुधिर गर्म गिरे यह लक्षण पित्त दूषित आर्त्तव के हैं।

औषध—कमलगट्टा, तगर, कूट, मुलैहटी, सफेद चन्दन, यह सब बराबर २ लेकर कूट कर बकरी के दूध में पीस के कपड़ा

से छान कर तीन दिन ऋतुकाल में वा जितने दिन खून गिरे पीवे। उससे योनि शुद्ध हो जायगी इसके पश्चात लक्ष्मण जड़ी को गौ के दूध में घोसकर छान कर सूँघे और १२ दिन तक पीवे तो रूप वाला बालक उत्पन्न हो।

वायु दूषित आर्त्तव

लक्षण :—जिस स्त्री के खून बहुत कम निकले और कुसुम के रङ्ग का निकले कटि में दर्द रहे. और योनि में दर्द रहे, ज्वर रहे; उसे वायु दूषित आर्त्तव कहते हैं।

औषध—आक की जड़ की छाल, दोनों कटीलियों की जड़, जामुन की जड़ की छाल, यह सब समान लं गौ के दूध में पीस कर पीवे पांच वा सात दिन जब तक रुधिर गिरे तब तक पीवे पश्चात् योनि शुद्ध होने पर लक्ष्मण जड़ी को गौ के दूध के साथ पीवे और सूँघे।

कफ दूषित आर्त्तव

लक्षण :—मासिक धर्म के समय जिस स्त्री के रुधिर चिकना और गाढ़ा निकले, रङ्ग बहुत लाल न हो यानी प्याज के रङ्ग का सा हो, नाभि में दर्द बहुत हो उसे कफ दूषित आर्त्तव समझे।

औषध—आक की जड़, मेंहदी लौंग, नाग केसर, खरैंटी की जड़, गंगेरण की छाल, यह सब बराबर २ ले बकरी के दूध में घोट पीवे।

दूसरा:—हरड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठ, मिरच, चीता, यह सब समान ले बकरी के दूध में पीस कर घोल छान कर पीवे। जितने दिन रुधिर निकले उतने दिन पीवे। फिर योनि

शुद्ध होने पर लक्ष्मण जड़ी बकरी के दूध में घोट कर पीवे और सूँघे।

सन्निपात दूषित आर्त्तव

लक्षण:—ऋतुमती स्त्री को बहुत तेज़ ज्वर हो, रुधिर काला, चिकना और गर्म निकले, और कोख में, योनि में, कटि में दर्द और हड़ फोड़ रहे नींद अधिक आवे।

औषध—अरंड की छाल, आम की छाल, निसोत, कमल-गट्टा, तगर, कूट, मुलहटी, सफेद चन्दन, यह सब समान लेकर बकरी के दूध में पीस कर पहिले दिन से सात दिन पीवे। वा जितने दिन रुधिर निकले उतने दिन पीवे। योनि शुद्ध होने पर सफेद आक की जड़, छोटी खटाई की जड़, लक्ष्मण जड़ी, बांझ ककोड़ा, सफेद फूल की विष्णुकान्ता यह सब सामान लेकर गौ के दूध में घोट छान कर नाक से पीवै, दाहिने नासिका से पीवे तो पुत्र और बायें नासिका से पीवे तो पुत्री होवे।

नोटः—लक्ष्मण जड़ी की पहिचान यह है कि लक्ष्मण के पत्तों पर लाल बूंदें होती हैं और पत्ते गोल होते हैं और पुरुष के आकार पत्तों पर होते हैं।

लक्ष्मण लेने की रीति यह है कि लक्ष्मणा की जड़ को खूब बारीक पीस फक्की ले के गौ का दूध ऊपर से पीवे या दूध में पीस छान कर पीवे। रात्रि में दहना स्वर चलता हो तब पीवे। ऋतु स्नान किए पीछे स्त्री विधि पूर्वक लक्ष्मणा की जड़ का सेवन करे तो बंध्या के भी पुत्र उत्पन्न हो।

स्त्रियां बंध्या क्यों होती हैं?

केवल स्त्रियां ही बंध्या नहीं होती पुरुष भी नपुसंक होते हैं पर यहां पर केवल स्त्रियों ही के विषय में लिखा जाता है।

स्त्रियों की योनि में इस तरह की बहुत सी त्रुटियां होती हैं जिनसे उनको बहुत से रोग हो जाते हैं मसलन प्रदर व रज संबन्धी अथवा जरायु पतन आदि रोगों के हो जाने से गर्भाशय सन्तान उत्पन्न करने के अयोग्य हो जाता है। और बंध्या उदर के दोष से होती है।

बंध्यापन के मुख्य २ दोष

१—काक बंध्याः— जिस स्त्री के एक सन्तान होकर फिर नहीं हो।

२—मृत वत्साः—जिस स्त्री के सन्तान होकर मर जाय।

३—गर्भ स्रावीः -जिस स्त्री के गर्भ रह कर मर जाय।

४—आदि बंध्याः—जिस स्त्री के गर्भ मात्र ही स्थित न हो।

अन्य बंध्याओं का विवरण

त्रिपक्षी बंध्या जो तीन पक्ष (डेढ़ मास) में ऋतुमती हो उसे त्रिपक्षी बंध्या कहते हैं।

औषध-स्याह ज़ीरा सफेद ज़ीरा, खुरासानी बच (सफेद बच) ककोड़े का फल, इन सब को समान लेकर चावल के पानी में पीस कर सूर्य की ओर मुंह करके स्त्री खड़ी होकर तीन दिन पीवे और गौ का दूध व चावल ही केवल खावे तो अवश्य गर्भ रहे।

शुभ्रती बंध्या

लक्षण—इसका शरीर व गाल सकुचे से रहे और देह का रूप रङ्ग विवर्ण हो जावे। उसे शुभ्रती बंध्या जाने।

औषध—नाग केसर, हाऊवेर, मोरशिखा यह तीनों तीन २ टंक, मिश्री १८ टंक, इन दवाओं को कपट छान कर तीन २ टंक की पुड़िया बनावे और प्रातः काल स्नान कर सूर्य मुख खड़े हो गाय के दूध के साथ लेवे दिन तक केवल दूध चावल भोजन करे तो शुभ्रती बंध्या के सन्तान हो।

औषधि :—स्याह और सुफेद ज़ीरा, खुरासानी बच, ककोड़ी, हड़जोड़ इन सब को समान लेकर चावलों के पानी में बारीक पीस छान कर सुबह सूर्य मुख खड़े हो तीन दिन पीवे। गौ का दूध साठी के चावल दिन ७ भोजन करे। तो सज्ञा बंध्या के गर्भ रहे।

सज्ञा बंध्या

लक्षण :—मासिक धर्म कभी अधिक दिनों में और कभी कम दिनों में हो, इसे सज्ञा बंध्या जाने।

त्रिमुखी बंध्या

लक्षण :—मैथुन समय स्त्री की योनि से जल निकले, भोजन से और मैथुन से तृप्त न हो, भोजन और मैथुन में चित्त बहुत राखे।

व्याघ्रणी बंध्या

लक्षण :—जिस स्त्री के एक सन्तान अवस्था चढ़कर हो दूसरी न हो।

औषधि :—त्रिपद्मी के लिये जो औषधि लिखी है वही व्याघ्रणी के लिये भी है।

बकी बंध्या

लक्षण :—सफेद खून आठवें दिन वा दसवें दिन निकले यह असाध्य होता है।

कमलिनी बंध्या

लक्षण :—स्त्री की योनि से बराबर पानी झरा करे। यह भी असाध्य है।

व्यक्तिनी बंध्या

लक्षणः-ज़ाहिर में प्रमेह होता है। स्वेत धातु नित्य गिरती है। स्त्रियों को प्रमेह होता नहीं पर इस प्रमेह का सोम नामक प्रदर हो जाता है।

औषधः—लाल चिरचिरा के बीज, मिश्री, आंवला, रतन जोत, इस सब को समान लेकर गौ के दूध में पीस कर छान कर २१ दिन तक पीवे। यह उपचार करने से व्यक्तिनी का प्रमेह निश्चय दूर हो, प्रमेह दूर होने पर काला अगर, केसर, ककोड़ा, मोर शिखा, स्याह ज़ीरा, सफेद ज़ीरा, इन सब को समान लेकर बछड़ा वाली गौ के दूध में पीस छान कर तीन दिन पीवे। और दूध चावल भोजन करे। ऐसा करने से व्यक्तिनी के सन्तान होवे।

गर्भ ठहरने के इलाज

१—सोने, चांदी और तांबे का चूर्ण इनमें घृत मिलाय पीवे तो गर्भ ठहर जाय।

२—पीपर, अदरक, स्याह मिर्च, नागकेसर इनको घी के साथ बन्ध्या स्त्री पीवे तो गर्भ रहे।

३—शिवलिङ्गी के सात बीज गुड़ में रख कर ऋतु स्नाता स्त्री खावे तो गर्भ स्थिति होवे।

४—सफेद फूल की भटकटइया की जड़ ऋतुसमय तीन दिन जल में पीस कर सबेरे पीवे तो गर्भ स्थित होवे।

५—स्त्री को नित्य मछली का मांस या कांजी या तिल या उड़द या दही खिलाओ तो रजो धर्म प्राप्त होकर बन्ध्या दोष निवृत्ति हो जायगा।

६—पुष्य नक्षत्र के तीन दिन में उखाड़ी हुई श्वेत कटियाली की जड़ को दो तोला चूर्ण दूध के साथ ऋतुकाल में तीन दिन बराबर पिलाने से निश्चय गर्भ धारण होगा।

गर्भ के पहचानने के चिन्ह

१—किसी का तो गर्भ रहने के दूसरे दिन ही सबेरे जी मचलाने लगता है—मुख का रंग और ही हो जाता है—देह भारी सी जान पड़ती है—स्त्री धर्म फिर नहीं होना—भोजन में अरुचि हो जाती है—पुरुष के संग से मन हट जाता है—शृंगार करने को जी नहीं चाहता—उबकाई व उलटी आने लगती है—पेट बढ़ने लगता है और शरीर दुबला हो जाता है और आलस्य और हर समय भरा सा रहता है—जी आराम करने को चाहा करता है—नीचे के शरीर में सुस्ती अधिक रहती है—खट्टी व सोंधी चीज़ें खाने को जी बहुत चाहता है—दस्त खुल कर नहीं होता—नींद अच्छी नहीं आती—स्तनों के मुख छोटे हो जाते हैं—और सब से अचूक गर्भवती की पहिचान यह है कि थोड़े से शहद को पानी में मिलाकर स्त्री को पिला दो थोड़ी देर पश्चात् ढूंड़ी में कुछ दर्द सा मालूम हो तो जान लो कि गर्भ है वरनः नहीं।

गर्भ के प्रथम अङ्ग कौन होता है

इस विषय में ऋषियों में बड़ा मत भेद है कोई किसी अङ्ग को प्रथम होना बतलाता है कोई किसी को जैसे शोनक ऋषि प्रथम सिर, कृतवीर्य हृदय, पाराशर्य नाभि, मार्कंडेय मुनि हाथ पैर, गौतम मुनि पुंगव कोष्ठ, श्री धनवन्तरि का मत है कि एक ही समय में गर्भ के सर्व अङ्ग और उपाङ्ग प्रगट होते हैं पर अति सूक्ष्म रूप में होने के कारण दिखाई नहीं देते।

जब (पुरुष) शुक्र (वीर्य) की अधिकता होती है तब पुत्र और जब (स्त्री) रज की अधिकता होती है तब कन्या उत्पन्न होती है।

(२) गर्भावस्था में नीचे लिखे रोग बहुधा होते हैं:—

१—बहुत सा थूकना और जी मचलानाः—इसके लिये अच्छी तरह से पाखाना साफ़ होने का प्रबन्ध करना चाहिये।

२—गुरदे के रोगः—यह रोग बहुधा गर्भ के पिछले महीनों में होता है। सर में बहुत दर्द रहता है। आंखों से कम दिखलाई देने लगता है और सारे शरीर और विशेष कर मुँह पर सूजन आ जाती है। इसकी दवा किसी योग्य वैद्य से ज्ञात करनी चाहिये। गर्भिणी स्त्री को गर्भ से तीसरे और पाचवें महीने के पीछे दूर की यात्रा नहीं करनी चाहिये। तीसरे और पांचवें महीनों के बीच में जो कहीं जाना पड़े तो भले ही जावे आठवें महीने में तो विशेष सावधान रहे।

३—रक्त का पतला पड़ जाना:—स्त्री बहुत पीली पड़ जाती है और उसकी रगें और पेशाब का मुकाम सूज जाते हैं। अगर गुरदे की बीमारी न हो तो पलंग पर लेटा रहना ही काफी है।

४—पीलिया:—स्त्री के पेशाब का रंग गहरा हो जाय और कपड़ों पर धब्बा आ जाय-आंखें पीला हो जांय और दस्तों का रंग मटियाला हो जाय तो इस अवस्था में योग्य वैद्य से दवा ज्ञात करे।

५—टांगों की रगों का फूल जाना:— टांगों की नसें फूल जाती हैं और उनके फट जाने का डर रहता है इस सूरत में टांगों में पट्टियां बांधना और पलंग पर लेटा रहना यथेष्ट होगा।

६—बवासीर:—यह रोग बच्चा होने के पश्चात अपने आप जाता रहता है। हलके जुलाबों से पाखाने को नर्म रक्खे और गरम पानी के भपारा ले, और लगाने के लिये माजूफल, अफीम का मलहम ठीक होगा।

७—पेशाब के मुक़ाम में खुजली होना:—गरम पानी में थोड़ा सुहागा मिला कर गरम पानी से दिन में कई बार धोना चाहिये। सादे गरम पानी से यदि पेशाब के स्थान को नित्य धोवे तो यह रोग कभी न हो। स्त्री को जब दस्त साफ न हो और कब्ज मालूम हो तो साधारण दवा है कि वह सुबह उठते ही एक गिलास ठन्डा जल पीकर और थोड़ा टहल कर तब टट्टी जावे तो टट्टी साफ होगी इसके अतिरिक्त हलके जुलाब की तरह त्रिफला भी गुणकारी है।

८—**जी मचलाना:**—जब जी मचलावे तो नित्य सुबह उठते ही एक गिलास ठन्डा जल पिया जाय तो आराम होगा।

९—**पेट गिरना:**—बच्चा होने के समय से पहले जब पेट में दर्द हो तो उससे यह समझ लेना चाहिये कि पेट में कुछ गड़बड़ी अवश्य है-इस दर्द का नतीजा यह भी होता है कि पेट गिरजाता है—इसका उपाय यह है कि ठन्डो २ चीज़ें खावे और अधिक आराम करे और पलंग का पैताना छः इंच ऊँचा कर सोवे यानी पैताना की तरफ से सिरहाने की तरफ ढालू पलंग पर सोवे और जैसे २ दर्द कम होता जाय वैसे २ ढलुआ कम करता जावे।

गर्भिणी स्त्री को गरम मसाला लाल मिर्च-अधिक खटाई, गरिष्ट भोजन, और गरम गरम चीज़ें नहीं खानी चाहिये—चीज़ ठन्डी करके खाना चाहिये, बासी भोजन कदापि न करे-फल खूब खावे।

महीने के महीने गर्भ का स्वरूपांतर

पहले मास में वीर्य जैसा का तैसा रहता है। दूसरे मास में घन (गाढ़ा) हो जाता है, तीसरे मास सिर और हाथ पैर के पांच पिंड और देह के छोटे छोटे अङ्गों के अवयव उसमें से फूटते हैं यानी निकलते हैं, चौथे मास में सब अङ्ग और उपाङ्ग प्रगट हो जाते हैं और हृदय के प्रगट हो जाने से उसमें चेतना भी प्रगट प्रतीत होती है। इसी से चौथे महीने में गर्भ अनेक वस्तु की इच्छा करने लगता है, तब स्त्री के दो हृदय

(एक स्त्री का और एक बालक का) होने से उस स्त्री को दो हृदनी, दो हृदय वाली कहते हैं। इस दो हृदयवाली स्त्री को इच्छित वस्तु न मिलने से बालक कुबड़ा, टोंटा, खंजा, बौना, बुरे नेत्र वाला अंधा होता है। तात्पर्य यह है कि ऐसे समय जिस वस्तु की दो हृदनी स्त्री इच्छा करे वही देवे तो बालक वीर्यवान चिरायु होता है।

दो हृदय के विशेष फल

जिस स्त्री की इच्छा राजा के दर्शन की होवे तो वह धनवान, महाभाग बालक को उत्पन्न करेगी और कपड़े, गहने पहनने की इच्छा करे तो बालक कपड़े गहने का शौक़ीन होगा जिस स्त्री का मन धर्म में रहे तो बालक धर्मात्मा होता है, सर्पादिक के दर्शन की इच्छा हो तो बालक हत्यारा कठोर हृदय वाला होता है, जो भैंसे का मांस खाने की इच्छा करे तो बालक लाल नेत्र वाला बहुत बलवान, शूरवीर होता है, सूअर के मांस की स्त्री इच्छा करे तो बालक बहुत सोने वाला और शूरवीर होगा, मृग मांस की इच्छा करने से बालक बनचारी और विक्रान्त होता है सारांश यह है कि दो हृदनी जैसी २ इच्छा करे वैसा ही बालक होता है।

पांचवें मास में गर्भ के मन प्रगट होता है, छठे मास में बुद्धि और सातवें मास में सर्व अङ्ग तथा उपाङ्ग प्रगट हो जाते हैं।

आठवें मास में माता और पुत्र में क्रम से परस्पर ओजका संचार होता है याना जब ओज गर्भ में संचार होता है तब गर्भ प्रसन्न और माता का मन मलीन होता है और जब ओज माता में प्रगट होता है तब माता प्रसन्न और गर्भ व्याकुल

होता है। इसी से वे दोनों कभी ग्लान (कुम्हलाये) से और कभी प्रसन्न होते हैं, इसी से आठवें महीने में पैदा हुआ बालक नहीं जीता कारण कि ओज इस आठवें मास में स्थिर नहीं रहता।

शरीर में पितृज-मातृज और रस जन्य भाग

पिता के वीर्य से बाल, मूछ, दाढ़ी, रोमांच नाखून, दांत नस, धमनी स्नायु, और शुक्र बनते हैं और माता के रज से मांस रुधिर मज्जा, मेदा, कलेजा, तिल्ली, आँत, नाभी, हृदय, और गुदा उत्पन्न होते हैं।

नोटः—लोग कहते हैं कि पुत्र वा कन्या माता से उऋण कभी नहीं होते उसका कारण यही है कि हृदय माता के ही रज से उत्पन्न होता है।

शरीर की पुष्टई, बल, वर्ण देह की स्थिति, यह सब रस से होते हैं। ज्ञान, विज्ञान, आयु, सुख, दुख, और सब इन्द्रियां ये आत्मा के सकाश से होते हैं।

गर्भ का जीवन

गर्भ के नाभि-नाड़ी से यानी नार द्वारा स्त्री की रस बहनें वाली नाड़ी से लगी हुई होती है, इसी से जो कुछ माता भोजन करती है उसका रस नार द्वारा गर्भ के देह में पहुंचता है इसी से गर्भ नित्य बढ़ता है। और जो जो चेष्टा माता करती है वही वही चेष्टा गर्भ करता है। इससे यह बात सिद्ध हुई कि माता को भोजन और विचारों में कितना ध्यान रखना चाहिए।

यह प्रश्न उपस्थित होता है कि जब गर्भ नित्य बढ़ता है तब वह चलता फिरता क्यों नहीं? इसका कारण यह है कि

गर्भ का मुंह झिल्ली से ढका रहता है और गला कफ़ से चिपटा रहता है तथा वायु के सब मार्ग रुके रहने से गर्भ न चलता है और न रोता है ।

गर्भवती के करने योग्य काम

गर्भवती पहले ही दिन से प्रसन्न चित्त रहे, शृङ्गार किए रहें, पवित्र और सफेद वस्त्र पहने, (स्त्री प्रायः सफेद वस्त्र को अमंगल सूचक समझती हैं, पर वास्तव में ऐसा है नहीं, वे सफेद वस्त्र के स्थान पर बहुत हल्के रंग का भी व्यवहार कर सकती हैं) सास, ससुर, बड़े बूढ़े और देवपूजन नियम से नित्य करती रहे, इन बातों से बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त होता है और आत्मा को बल प्राप्त होता है । चिकना, मन को अच्छा लगने वाला, पतला हलका और जल्द हज़म होने वाला भोजन करे । नित्य समय पर भोजन करे ।

गर्भवती के न करने योग्य काम

गर्भवती परिश्रम, मैथुन न करे, शोक न करे, सवारी में बैठना, फस्तखुलवाना, मल तथा मूत्र के वेग को रोकना, तथा घोटुओं के बल बैठना भी मना है । रात को न जागे, लड़ाई टंटा न करे । इन दोषों से जो जो भाग गर्भवती के पीड़ित होते हैं वही वही भाग गर्भ के पोड़ित होते हैं । गर्भवती स्त्री मैली, बुरे रूप की, हीन अङ्ग वाली स्त्रियों को न छुए । दुर्गन्ध को न सूंघे, और जो आंखों वा कानों को अच्छा न लगे उसे न देखे न सुने और न बुरे बचन किसी से कहे । बासे, सूखे, और काढ़े के समान अन्न को न खावे । देवता के नाम के वृक्ष स्माशान को कदापि न जाय । जिन बातों से अपनी तथा अपने माता पिता, सास ससुर के कुल की बड़ाई का नाश

होता हो वा कोई बुराई होती होय तो उन्हें त्यागे। ज़ोर चिल्लावे नहीं। और जिनके करने से गर्भ नष्ट होने को आशङ्का होवे ये काम न करे, तैल की मालिश तथा उबटना अधिक ज़ोर से न करे। कठोर आसन न करे, और सोने की चारपाई बहुत ऊँची न रक्खे। कपड़ा ढीला पहिने।

गर्भिणी स्त्री चन्द्र वा सूर्य्य ग्रहण को कभी न देखे बल्कि अपने ऊपर ग्रहण की परिछांही तक न पड़ने दे। एक पहर ग्रहण पड़ने से पहले और उग्रहण तक एक कोठरी में बैठी रहे और कोई काम न करे। हिन्दू मात्र इस समय भगवत भजन करना है सोई करे। इस समय की असावधानी से बालक की देह अंग भंग हो जाती है।

गर्भिणी स्त्री को चाहिये कि खाने, सोने, काम करने, विश्राम करने आदि के कार्य क्रम से करे। क्रम के बिगड़ने से ही प्रसव में पीड़ा अधिक हो जाती है।

गर्भवती का नित्य परमेश्वर, पति वा किसी अन्य विद्वान महापुरुष वा स्त्री का ध्यान करना चाहिये। नीचे लिखी बातें गर्भ को अपघात करती है अत्यन्त भारी, चरपरी, अथवा गरम चीज़ें न खावे, लाल कपड़ा नहीं पहने नशीली चीज़ों का सेवन न करे।

गर्भावस्था

गर्भिणी स्त्री गर्भ के पहिले महीनों में यानी पहिले मासों में पाचक और पथ्यकर अन्न को सेवन करे। इस समय में पेट में अस्वस्थता पैदा होती है, इस लिये जिससे मन घृणा उत्पन्न हो ऐसे पदार्थ सेवन न करे। जिह्वा का स्वाद रुचि पर ध्यान न देते हुए साध्य, पाचक और पौष्टिक आहार

सेवन करे। गर्भ स्थित के पहिले मास में नित्य के परिमाण से अधिक अन्न खाने की आवश्यकता नहीं है। गर्भ स्थित के पिछले मासों में उदर की बेचैनी दूर हो जाती है और भूख भी अधिक लगती है। इस अवस्था में गर्भवती स्त्री को कष्ट करना योग्य नहीं, इसलिये उसके शक्ति का व्यय कमती होता रहता है। किसी समय जो अन्न सेवन किया करते हैं उसको बढ़ाना नहीं चाहिये। जैसे दिन भर में दो समय खाने का अभ्यास है, और बीच बीच में और भी किसी समय भूख लगती है तो तीन बार खाना अच्छा परन्तु इन दो समयों में पेट में अधिक अन्न ठूसना अच्छा नहीं। दूध, शाक, पकेफल यह पदार्थ गर्भिणी सेवन करे तो उत्तम है।

वस्त्र—गर्भवती को पिछले मासों में सर्दी बचाने की अति आवश्यकता है। अतएव फलालेन वा रुई के कपड़े पहिनना अति उत्तम है। सब कपड़े यानी चोली धानी भी ढीली पहिनना चाहिये। कसे हुए पहिनने से गर्भ को पीड़ा होती है उसकी बाढ़ रुक जाती है वा कम बढ़ती है और उसके बहुधा गिर जाने का भी भय रहता है।

गर्भ—स्त्री को शीघ्र बालक होकर कष्ट दूर होने में ढीले वस्त्रों का पहिरना भी एक उपाय है।

व्यायाम

और व्यायामों के बनिस्बत टहलना उत्तम है। गर्भवती स्त्री को व्यायाम करना आवश्यक है। व्यायाम भी अपनी २ आर्थिक अवस्था तथा अपनी २ शक्ति के अनुसार करे। खुली हवा में टहलना चाहिये और उतना ही टहले थके नहीं।

बाज़ स्त्रियों को दो चार मील चलने पर भी थकावट नहीं मालूम होती और बाज़ दो चार फरलांग ही चलने पर थक जाती हैं सो अपनी शक्ति अनुसार चले जो स्त्रियां बाहर गाड़ी पर जा सकती हैं उन्हें खुली गाड़ी में धीरे २ और सड़क पर ही जाना चाहिए। तेज़ और बे रास्ते में चलने से गाड़ी में हाल लगती है जो गर्भवती को हानिकारक है। नित्य नियम से टहलें जरूर। इससे बच्चा कम कष्ट पाता है। बहुधा देखा गया है कि मज़दूर स्त्रियां चलते फिरते यानो बहुत कम कष्ट से बच्चा जनती है। बोझा उठान बड़ी भीड़ में जाना उपवास करना गर्भ को हानि पहुंचती है।

गर्भावस्था में जिस २ मास में पीड़ा हो उस उस मास के इलाज

प्रथम मासः—जो पहिले मास में गर्भ में पीड़ा हो तो चन्दन, शतावर, खांड़, मोगरो के फूल में सब बराबर ले चावलों के जल से पीस दूध में मिलाय गर्भिणी को पिलावे तो प्रथम मास की पीड़ा आराम हो।

दूसरा मासः—कमल का कल्क, सिंघाड़ा, कसेरू—तृण विशेष इन्हीं को चावलों के पानी में पीस चावलों के जल से ही पिलावे तो गर्भ स्थिर हो और शूल रोग नष्ट हो।

तीसरा मासः—क्षीर काकोली—काकोली—आंवला इन सब को गरम जल में पीस गर्भिणी को पिलावे और चावल दूध में पकाय खिलावे तो तीसरे मास की पीड़ा शान्त हो।

औरः—पद्माख, कमल, कूट, जायफल यह सब बराबर ले जल से पीस दूध और मिश्री मिलाय पिलावें तो शूल रोग नष्ट हो और गर्भ को सुख मिले।

चौथा मासः—पीसा हुआ कमल, जायफल, कटैली, गोखुरू-छोटी कटेली बड़ी कटेली इन सबों को जठराग्नि के अनुसार वैद्य से पूछ दुध के साथ पिलावे तो गर्भ शूल दूर हो।

पांचवां मासः—नीला कमल-सरि काकोली इन्हीं को दूध में पीस घी और शहद मिला कर गर्भवती पीवे तो गर्भ रोग नष्ट होय अथवा नीला कमल काकोली-इन्हीं समान को ले ठंडे जल से पीस दूध मिलाय पिलावे।

छठा मासः—बिजौरा के बीज—मालकांगनी चन्दन-कमल इन्हीं को दूध में मिला कर पीवे।

सातवां मासः—शतावर कमल की जड़ पीस दूध के साथ पीवे।

आठवां मासः—चावलों के जल से धनिया को पीस कर पान करे अथवा ढाक के पत्ते ठंडे जल में पीस कर पीवे।

नौवां मासः—अरण्ड की जड़—काकोली इन्हीं को ठंडे जल से पीस गर्भिणी पीवे।

मुलहठी—साल-वृक्ष के बीज— देवदार लोनियासाग, काले तिल, राल, शतावरी, पीपल, कमल की जड़, जवासा—गौरीसर, वायसुरई—दोनों—कटेली, सिंघाड़ा, कसेरू, दाख—मिश्री सब औषध तीन २ माशे लेवे और सात मास तक सात २ दिन पीवे तो कभी गर्भस्राव वा गर्भपात न हो।

गर्भवती स्त्री अपने चित्त को कभी न बढ़ने दे।

टूड़ी, पेड़ू, जांघ वा पेट में कहीं दर्द जान पड़े तो नारियल का तेल गरम कर मलना चाहिए।

बहुधा गर्भवती स्त्री मिट्टी भून कर वा कोरे मिट्टी के सनेखी सौंधाहट की चाट में खाया करती है—यह कदापि

नहीं खाना चाहिए। इससे शरीर पीला पड़ जाता है और खून कम उत्पन्न होने लगता है।

इसके बजाय बंसलोचन—या जहर मोहराखताई खावे—इन दोनों से गर्भ भी पुष्ट होता है और यह सौंधो भी होती है।

गरी और मिश्री खाना बहुत लाभदायक है।

बहुत सी स्त्रियों को देखा है कि उनके हर साल सन्तान होती है. यह स्त्री व बच्चा दोनों को हानि कारक है न उनका स्वास्थ ही ठीक रहता है और न उनका लालन पालन ही उचित रीति से होता है और साथ ही स्त्री युवा अवस्था में ही बूढ़ी सी हो जाती है। वैद्यक शास्त्र में लिखा है कि जब तक बालक पांच वर्ष का न हो गर्भाधान नहीं करना चाहिए कम से एक जब तक बच्चा माता का दूध पीना न छोड़ दे तब तक तो कुछ होना ही नहीं चाहिए। अतएव जो महाशय अपनी आसुरी इच्छा के चेरे हैं पर इस दुर्दशा से बचना चाहते हैं उनको चाहिए कि वे संग्रह कर्त्ता से गर्भ निवारण के यत्न लिख कर पूंछ लें।

रजस्राव बन्द होने पर जारी करने की औषधि

१—कपास के फूल व पत्तों को आधपाव लेकर एक सेर पानी में पकावे। पकते २ जब पावभर पानी शेष रह जाय तब उतार कर छान ले—फिर उसमें दो तोले पुराना गुड़ डाल कर पान करे।

२—नीम की छाल कुटी हुई दो तोले, सोंठ ४ माशे और गुड़ दो तोले इनको डेढ़ पाव पानी में पकावे, जब आधपाव शेष रह जाय, तब उतार कर छान कर पीवे।

३—काले तिल एक तोला और गोखरू एक तोला लेकर दोनों को रात में पानी में भिगा दो। इसे सुबह छान कर मिश्री डाल कर पान करने से लाभ होता है।

४—मूली, गाजर, और मेथी के बीजों को समान भाग लेकर बारीक चूर्ण करके सेवन करे।

५—मजीठ के चूर्ण को भी सेवन करने से रजस्राव शीघ्र होने लगता है।

स्त्री रोग

१—दो तोला मुलहठी और दो तोला मिश्री इनका चूर्ण तण्डुल-जल के साथ देने से पित्त प्रदर रोग शान्त होगा।

२—दो टंक रसोत—और दो टंक चौलाई की जड़ इनको पीस मधु के साथ सात दिन पिलाओ तो सब तरह के प्रदर रोग अच्छे होंगे।

३—मधु के साथ आंवले का रस पिलाओ तो सोम रोग दूर होगा।

सोमरोग—बारम्बार मूत्र होने को सोम रोग कहते हैं—मुलहठी और आंवला की समान बुकनी दूध के साथ पीवे तो सोम रोग आरम्भ होता है।

रिक्त प्रदर रोग के लक्षण विकारण

यह अति भोजन, अति शयन मैथुन करने से होता है जिसमें स्त्री की योनि से एक प्रकार का पानी बिना मैथुन के गिरता रहता है जिससे वह बहुत दुर्बल हो जाती है।

१—शरीर में अचानक कमज़ोरी मालूम होता है और मन में अकवकाई यानी घबराहट सी जान पड़ती है (२)—जी डूबा सा जाता है—खड़े होने से सर में घुमनी व चक्कर आवे—

पेट के ऊपर और दोनों जांघों में रह रह कर पीड़ा हो—तो जानना चाहिए कि स्राव होने वाला है और अगर कुछ खून का सा पानी भी गिरने लगे तो निश्चय जानना चाहिए कि स्राव होगा। अगर कमर और जांघों का वा गुदा में ज्यादा दर्द मालुम हो—खून सो चले खून वा खून के चकत्ते से बाहर आने लगे तो इस बात के जान लेने में पूरा विश्वास कर लेना चाहिए कि गर्भ आशय से गर्भ अलहदा हो गया है जब स्राव के लक्षण दिखाई दे तो योग्य वैद्य या डाक्टर से इलाज करावे। एक दो बातें सावधानी के लिए लिख दी जाती है।

ठन्डी २ चीज़ें खावे और अधिक आराम करे तथा पलंग का पैताना ६ इञ्च ऊंचा कर सोवे और जैसे २ दर्द कम हो वैसे २ पैताना नीचा करती जाय।

इलाज

१—एक तोला फालसे की छाल को एक मिट्टी के कुल्हड़ में भिगो दे; प्रात; छान मिश्री मिला कर पीवे एक सप्ताह में आराम हो जायगा।

२—कतीरा रात को भिगो कर प्रातः छान मिश्री मिला कर पीवे।

३—चिकनी सुपारी को पीस घी मल कर शक्कर मिलाय दो दो तोला प्रति दिन दोनों समय खाय तो प्रदर रोग जाता रहता है।

४ - भिन्डी की जड़ सूखी पाव भर पिडारु (इसे सुथनी भी कहते हैं) सूखा हुआ पाव भर दोनों कूट छान छः छः माशे की पुड़िया बना ले पाव भर गौ के दूध में एक तोला

चीनी मिला कर एक पुड़िया मुंह में रख शाम सवेरे उतार जाया करे। तेल खटाई मिर्च आदि गर्म चीज़ों का परहेज करना चाहिए। उसके सेवन से श्वेत प्रदर जाता रहता है।

गर्भिणी के ज्वर की चिकित्सा

गर्भ की अवस्था में स्त्रियों को बहुधा नीचे लिखे रोग हो जाया करते हैं इस अवस्था में हर एक की दवा बजाय लाभ के हानि कारक होती है और हानि होने पर जच्चा और बच्चा दोनों को कष्ट होता है। अतएव किसी योग्य वैद्य या डाक्टर से चिकित्सा करावे।

नीचे लिखी बीमारियों के लक्षण व दो एक दवा दे दी जाती है:—

ज्वरः—१ मुलेठी, लाल चन्दन, खस की जड़, अनन्तमूल और कमल के पत्ते, इन पाँचों का काढ़ा बना कर ठन्डा होने पर शहद और खाड़ मिला कर पिलाने से गर्भिणी का ज्वर अच्छा होता है—

२—लाल चन्दन, अनन्त मूल, लोध और दाख, इन चारों के काढ़े में मिश्री मिला कर देने से ज्वर शान्त होता है।

३—अरण्ड की जड़, गिलोय, मजीठ, लाल चन्दन, देव-दारु, और पदुमाख, इन छहों का काढ़ा गर्भवती के ज्वर को नाश करता है।

४—बकरी के दूध के साथ सोंठ पीने से गर्भिणी स्त्रियों का विषम ज्वर आराम हो जाता है।

५—धनिया, नागर मोथा, खस, सुगंध वाला, श्योनाक, गिलोय, अतीस, बरियारा, पित्तपापड़ा, जवासा और लाल चन्दन, इन ग्यारहों दवाओं का काढ़ा गर्भिणी और प्रसूता के

रुधिर विकार, खून के दस्त, आंव व मरोड़ के दस्त, और ज्वर इन सब को आराम करता है।

६—सौंठ और बेल गिर के काढ़े में जौ का सत्तू मिला कर पिलाने से वमन और अतिसार आराम हो जाते हैं। यह नुसखा गर्भिणी के दस्तों पर उत्तम पाया गया है।

७—सुगंध वाला अतीस, नागर मोथा मोचरस और इन्द्र जौ इनका काढ़ा पीने से गर्भिणी का गिरता हुआ गर्भ, अतिसार, प्रदर, और पेट का दर्द सब शांत हो जाते हैं।

८—भिठवन, वरियारा, और अरूसे का काढ़ा रक्त पित्त को आराम करता है और साथ ही गर्भिणी के कमल (पिलिए का भेद) सूजन, श्वास, और ज्वर को आराम करता है।

९—आम और जामुन की छाल के काढ़े में खीलों का सत्तू मिलाकर गर्भिणी का ग्रहणी रोग शान्त हो जाता है।

१०—चावल के धोवन में मिश्री मिला कर पिलाने से गर्भिणी की वमन बन्द हो जाती है। धनिया का चूर्ण खाकर मिश्री मिला हुआ चावलों का पानी पीने से निश्चय ही गर्भवती की कै बन्द हो जाती है।

११—भारङ्गी, सोंठ और पीपल इनका चूर्ण गुड़ के साथ खिलाने से खांसी और श्वास आराम हो जाता है।

१२—सोंठ का काढ़ा ठन्डा करके पिलाने से गर्भिणी का बात रोग आराम हो जाता है।

१३—शहद, अड़ूसा, चन्दन, सेंधानोन, इन्द्रजौ और घृत यह जल के साथ पीस कर देने से गिरता हुआ गर्भ शीघ्र थम जाता है और गर्भ वेदना भी आराम हो जाती है।

१४—धनिया, रसौत, लोंध और मुलेठी पीने से गर्भ ठहर जाता है।

१५—शर्करा के साथ गौ का दूध सेवन करने से शुष्क गर्भ की शान्ति होती है।

१६—बहुत सवेरे सो कर उठ और ठन्डा पानी पीने से वमन नहीं होती।

१७—नियम से और हल्का भोजन करने से कब्ज़ नहीं होता।

१८—जल्द हज़म होने वाले भोजन करने से पेट में पीड़ा नहीं होती।

१९—दांतों का दर्द:—यह दर्द पहले महीने से पांच महीने तक होता है नित्य दातून करे वा कोई मंजन करे तात्पर्य यह है कि दांतों को साफ रक्खे तो दांत में दर्द नहीं होता।

२०—स्वांस लेते समय कष्ट होना:—यह कष्ट बहुधा आठवें वा नवें मास में बहुत होता है—मेहनत के काम छोड़ देना चाहिए—भोजन में सावधानी रक्खे। कमर में कसकर धोती इत्यादि नहीं बांधनी चाहिए।

गर्भ स्राव और गर्भ पात

गर्भ रहने से ४ मास तक तो गर्भ स्राव और ४ मास के पश्चात गर्भ पात कहाता है। ऐसे समय में योग्य वैद्य वा डाक्टर की शरण जाना चाहिए।

गर्भ स्राव व गर्भपात होने के कारण ये हैं:—

१—माता पिता कष्ट कठिन रोग में फंसे हुए हों।

२—पिता की अवस्था से माता की अवस्था अधिक हो।

३—अधिक सहवास करने से।

४—माता के शरीर में कोई रोग होने से।

५—रात में जागने से।

६—बहुत भोजन करने से।

७—अति प्रसन्न वा अति दुःखित होने से।

८—गिरने से वा भय खाजाने से।

स्राव की आराम की दवा या इलाज

१—मुलहठी, देवदारु, दुद्धी इनके संग दूध को पीवे।

२—शतावर और दुद्धी का काढ़ा पीवे।

३—अगर इन दवाइयों से रुक जावे तब गूलर के पके फल को गौ के दूध में खिलावे।

४—ठन्डे जल से प्रसव स्थान को धोवे अगर रुधिर निकल ही आया होवे तो दूध के संग कसेरुवा सिंघाड़ा वा कमल औटाकर और ठन्डा करके पिलावे अथवा दो तीन चावल भर अफीम का सत किसी सूखी चीज़ में खिला देवे। जो खून अधिक निकले तो घड़े की मिट्टी, मजीठ, धाम के फूल, गेरु, राल, रसौत सब को पीस कर मीठा मिलाकर चटावे।

पहिलोटी की बेर तो गर्भ पात दवा ७ घन्टे ही में हो लेता है यदि दूसरी वा तीसरी बार हो तो दो तीन दिन लग जाते हैं।

सबसे ध्यान देने की बात यह है कि यदि ऐसा हो जाय तो स्त्री को छः मास तक पुरुष के पास तक नहीं जाना चाहिए और बहुत नियम से रहे। थोड़ा भोजन करे, मल कोश को शुद्ध रक्खे।

भोर उठते ही जो भूख लगे तो थोड़ा सा हलका भोजन करले।

जो जी मिचलावे वा उलटी आती हो तो थोड़ा सा दूध पी लेवे वा चिरायते का अर्क पीवे वा नीबू का शरबत अथवा केवल नीबू के रस को ठन्डे पानी में मिलाकर पी लेवे।

जो छाती में दर्द हो वा जलन हो तो चिराइते का अर्क पीना चाहिए।

मुद्रक—गनेशप्रसाद केसरवानी, राजपाली प्रेस, इलाहाबाद।

आवश्यक सूचनाएँ

(क) प्रायः देखा जाता है कि शुद्ध और उत्तम औषधियां प्राप्त करने में सर्वसाधारण को बड़ी २ दिक्कतें उठानी पड़ती हैं अतएव हम जनता के लाभार्थ उन सभी औषधियों को एकत्र करने की चेष्टा कर रहे हैं जिनका उल्लेख इस पुस्तक में हुआ है।

(ख) यदि कोई सज्जन अपने रोग के संबन्ध में सलाह लेना चाहें तो वे निसंकोच निम्न लिखित पते पर पत्र व्यवहार कर सकते हैं। हमें कई योग्य डाक्टरों और वैद्यों ने सहायता देने का बचन दे दिया है। आशा है सर्व-साधारण इससे अवश्य लाभ उठायेंगे। विश्वास रखिए कि सभी पत्र गुप्त रखे जांयगे

उत्तर के लिए एक आने का टिकट आना जरूरी है।